एम.ए.एच.

एम.ए. (इतिहास)
द्वितीय वर्ष

सत्रीय कार्य
2024-2025

एम.ए. इतिहास द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रमों के लिए
जुलाई 2024 और जनवरी 2025 सत्रों के लिए

एम.एच.आई.-03	:	इतिहास-लेखन
एम.एच.आई.-06	:	भारत में विभिन्न युगों के दौरान सामाजिक संरचना का विकास
एम.एच.आई.-08	:	भारत में पारिस्थितिकी और पर्यावरण का इतिहास
एम.एच.आई.-09	:	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन
एम.एच.आई.-10	:	भारत में नगरीकरण
एम.पी.एस.ई.-003	:	पश्चिम राजनैतिक चिंतन (प्लेटो से मार्क्स तक)
एम.पी.एस.ई.-004	:	आधुनिक भारत में सामाजिक एवं राजनैतिक चिंतन

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

इतिहास संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068

एम.ए. इतिहास (द्वितीय वर्ष)
सत्रीय कार्य
जुलाई 2024 और जनवरी 2025 सत्रों के लिए

प्रिय विद्यार्थी,

आपको प्रत्येक पाठ्यक्रम में एक सत्रीय कार्य करना है। सभी सत्रीय कार्य अनिवार्य हैं। प्रत्येक सत्रीय कार्य पूरे पाठ्यक्रम पर आधारित है।

सत्रीय कार्य के सभी प्रश्नों के उत्तर आप अपने शब्दों में दें। यह अत्यंत आवश्यक है कि प्रश्न का उत्तर जितने शब्दों में देने के लिए कहा जाए उसका उत्तर लगभग उतने ही शब्दों में दीजिए।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद आप इसे अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक के पास जमा करें। सत्रीय कार्य जमा करने के बाद इसकी पावती अवश्य प्राप्त कर लें और इसे अपने पास संभाल कर रख लें। अच्छा हो कि आप अपने सत्रीय कार्यों के उत्तर की फोटोकॉपी भी अपने पास रख लें।

सत्रीय कार्यों के उत्तर जाँचने के बाद जाँचे गये उत्तर अध्ययन केन्द्र से आपको लौटा दिए जाएँगे। आप इसकी माँग अवश्य करें। अध्ययन केन्द्र आपके द्वारा प्राप्त अंक **विद्यार्थी पंजीकरण एवं मूल्यांकन प्रभाग, इग्नू, दिल्ली** को भेज देगा। इसे आपके ग्रेड कार्ड में शामिल कर लिया जाएगा।

सत्रीय कार्य जमा करना

आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सत्रांत परीक्षा देने से पहले आप सत्रीय कार्य अवश्य जमा करा दें। इसलिए आपको यह सलाह दी जाती है कि आप इसे दी गई अवधि के भीतर पूरा कर लें। एम.ए. द्वितीय वर्ष में आपको कुल मिलाकर 4 सत्रीय कार्य करने हैं। लेकिन अगर आपने एमपीएससी–003 और एमपीएससी–004 पाठ्यक्रमों का चयन किया है तो आपको कुल मिलाकर 5 सत्रीय कार्य करने होंगे। सभी सत्रीय कार्यों की जमा करने की अंतिम तारीख 31 मार्च 2025 है लेकिन आपको हम यह सलाह देना चाहते हैं कि आप अपने पाठ्यक्रम के अध्ययन के साथ-साथ इसे बारी-बारी से पूरा करते चलें और इसी हिसाब से आप उसे जमा भी करते जाएँ ताकि आपको अंक, परामर्शदाता की टिप्पणी और मूल्यांकित सत्रीय कार्य मिलते रहें। सुनियोजित ढंग से योजना बनाकर आप निर्धारित अवधि के भीतर अपने सारे सत्रीय कार्य पूरे कर सकते हैं । सभी सत्रीय कार्यों को जमा करने के लिए अंतिम तारीख का इंतजार नहीं करें क्योकि एक ही साथ सारे सत्रीयकार्यो को हल करना आपके लिए मुश्किल हो जाएगा। सत्रीय कार्य जमा करने की निर्धारित तिथियाँ नीचे सारणी में दी गई हैं:

सत्र	सत्रीय कार्य जमा करने की तारीख	सत्रीय कार्य जमा करने का स्थान
जुलाई 2024 सत्र के विद्यार्थियों के लिए	31 मार्च 2025	अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक के पास
जनवरी 2025 सत्र के विद्यार्थियों के लिए	30 सितम्बर 2025	अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक के पास

सवालों का जवाब देने से पहले नीचे दिए गए निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए:

सत्रीय कार्य के लिए निर्देश

इन सत्रीय कार्यों में दो तरह से सवाल पूछे जाएँगेः

1) प्रत्येक **विवरणात्मक और निबंधात्मक प्रश्नों** का उत्तर लगभग **500 शब्दों** में देना होगा और प्रत्येक प्रश्न के लिए **20 अंक** निर्धारित होंगे।

2) प्रत्येक **लघु श्रेणी प्रश्नों** का उत्तर लगभग **250 शब्दों** में देना होगा और प्रत्येक प्रश्न के लिए **10 अंक** निर्धारित होंगे।

निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखने से आपके लिए उत्तर देना आसान होगाः

क) **नियोजन** : सत्रीय कार्यों को ध्यान से पढ़िए। उन इकाइयों को ध्यान से पढ़िए जिनसे ये सवाल पूछे गए हैं। प्रत्येक सवाल का जवाब देने के लिए कुछ प्रमुख बिन्दुओं को अलग से लिख लें और इन्हें तार्किक ढंग से फिर से व्यवस्थित कर लें।

ख) **चयन** : अपने जवाब की रूपरेखा बनाते समय जरूरी बातों का ही उल्लेख करें। उत्तर को विश्लेषणात्मक बनाएँ। निबंधात्मक प्रश्न में प्रस्तावना और निष्कर्ष अवश्य शामिल करें। प्रस्तावना के अन्तर्गत उत्तर के प्रमुख पक्षों को प्रस्तुत करें और यह बताएँ कि आप इस सवाल का जवाब किस तरह से देने जा रहे हैं। अपने उत्तर के उपसंहार में मुख्य बिन्दुओं का सार भी दें।

उत्तर देते वक्त इस बात का ध्यान रखें किः

- आपका उत्तर तर्कसंगत और सुसंगत हो,
- वाक्यों और अनुच्छेद के बीच स्पष्ट संबंध हो,
- आपकी शैली, अभिव्यक्ति और प्रस्तुति के साथ-साथ आपके उत्तर भी सही हों,
- यह चेष्टा करें कि आपके उत्तर शब्द सीमा से अधिक न हों।

ग) **प्रस्तुति** : जब आप संतुष्ट हो जाएँ तो सत्रीय कार्य जमा करने से पहले इसे साफ-साफ लिख लें। जिन बिंदुओं पर आप बल देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित भी कर सकते हैं।

घ) **व्याख्या** : इतिहास लेखन में व्याख्या एक निंरतर प्रक्रिया है। यह आपकी योजना और चयन में पहले ही अभिव्यक्त हो चुका है। "हो सकता है", "संभव है", "हो सकता था", आदि जैसी व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ खुद ब खुद लेखन में व्याख्या के तथ्य शामिल कर लेती हैं। यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि इस प्रकार की टिप्पणियों के साथ-साथ आपके उत्तर में इसे पुष्ट करने वाले तथ्य भी शामिल होने चाहिए।

एम.एच.आई.-03: इतिहास-लेखन
अध्यापक जांच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.-03
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.-03/ए.एस.टी./टी.एम.ए./2024-25
पूर्णांक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-क

1. वस्तुपरकता क्या है? इतिहास-लेखन में व्याख्या की क्या भूमिका है? **20**

2. 'सूक्ष्म इतिहास' से आप क्या समझते हैं? इतिहास-लेखन की इस परम्परा से सम्बन्धित इतिहासकारों और उनके लेखन का वर्णन कीजिए। **20**

3. इतिहास-लेखन की यूनानी-रोमन परम्परा की विशिष्टताओं की चर्चा कीजिए। **20**

4. इतिहास-लेखन के अनाल स्कूल के संस्थापक कौन थे? उनके लेखन की चर्चा कीजिए। **20**

5. सल्तनल काल के दौरान इंडो-फारसी इतिहास-लेखन की महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन कीजिए। **20**

भाग-ख

6. द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पश्चिम में मार्क्सवादी इतिहास-लेखन पर एक टिप्पणी लिखिए। **20**

7. भारत में उपनिवेशवादी इतिहास-लेखन की तुलना राष्ट्रवादी इतिहास-लेखन से कीजिए। **20**

8. जनोन्मुखी इतिहास से आप क्या समझते हैं? भारतीय इतिहास-लेखन के संदर्भ में इसकी विवेचना कीजिए। **20**

9. भारत में महिलावादी इतिहास-लेखन पर एक टिप्पणी लिखिए। **20**

10. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर लगभग **250 शब्दों (प्रत्येक)** में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : **10+10**

    क) सामान्यीकरण

    ख) भारतीय पुनर्जागरण पर विभिन्न दृष्टिकोण

    ग) प्राचीन भारतीय इतिहास-लेखन

    घ) उत्तर आधुनिकतावाद और इतिहास-लेखन।

एम.एच.आई.-06: भारत में विभिन्न युगों के दौरान सामाजिक संरचना का विकास
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.-06
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.-06/ए.एस.टी./टी.एम.ए./2024-25
पूर्णांक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य दो भागों में बंटा है। आपको हर भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग 500 शब्दों में) अवश्य देने हैं। कुल मिलाकर आपको पांच प्रश्नों के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-क

1. प्राचीन भारत के इतिहास को लिखने हेतु प्रयुक्त ऐतिहासिक उपकरण क्या हैं? चर्चा कीजिए। **20**

2. पुरापाषाण काल में समाज की प्रकृति पर टिप्पणी कीजिए। **20**

3. वैदिक काल में समाज की प्रकृति के विषय में अनुष्ठान क्या उजागर करते हैं। विस्तार से बताएं। **20**

4. बौद्ध धर्म व जैन धर्म के उदय को चिन्हित करने वाले सामाजिक-धार्मिक और बौद्धिक विक्षोभ पर टिप्पणी कीजिए। **20**

5. चर्चा कीजिए कि प्रारंभिक मध्ययुगीन समाज का क्या तात्पर्य था? **20**

भाग-ख

6. प्रायद्वीपीय भारत में ग्रामीण समाज की प्रकृति पर टिप्पणी कीजिए। **20**

7. बी. डी. चटोप्पाध्याय और एन. ज़िग्लर (N. Ziegler) के शोध के संदर्भ में राजपूतों के उत्पति व उत्थान पर चर्चा कीजिए। **20**

8. औपनिवेशिक काल के दौरान विदेशी प्रवास की प्रकृति पर टिप्पणी कीजिए। **20**

9. क्या उपनिवेशवाद ने जाति की धारणाओं को आकार दिया? चर्चा कीजिए। **20**

10. राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी पर टिप्पणी कीजिए। **20**

एम.एच.आई.-08: भारत में पारिस्थितिकी और पर्यावरण का इतिहास
अध्यापक जांच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.-08
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.-08/ए.एस.टी./टी.एम.ए./2024-25
पूर्णांक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य दो भागों में बंटा है। आपको हर भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग 500 शब्दों में) अवश्य देने हैं। कुल मिलाकर आपको पांच प्रश्नों के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-क

1. क्या आप इस बात से सहमत हैं कि भूदृश्य की प्रकृति मानव बस्तियों के पैटर्न को प्रभावित करती है? भारतीय उपमहाद्वीप के संदर्भ में विस्तार से बताएं। **20**

2. कृषि-पूर्व समाजों की मानव-प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग की प्रथाओं पर एक नोट लिखिए। **20**

3. भारतीय प्राकृतिक संसाधनों पर औपनिवेशिक हस्तक्षेपों का पारिस्थितिक प्रभाव पर्यावरण इतिहासकारों की प्रमुख चिंता रही है। टिप्पणी लिखिए। **20**

4. भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि विस्तार के पैटर्न पर चर्चा कीजिए। **20**

5. भारतीय इतिहास में कांस्य की शुरुआत पर चर्चा कीजिए और इस प्रक्रिया के महत्व की जांच कीजिए। **20**

भाग-ख

6. पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर एक नोट लिखिए। **20**

7. औद्योगिक क्रांति और उसके प्रसार ने औपनिवेशिक सत्ता की पर्यावरण के प्रति धारणा को कैसे आकार दिया? **20**

8. पूर्व-औद्योगिक जल प्रबंधन प्रणाली औपनिवेशिक जल प्रबंधन प्रणालियों से बहुत अलग थी। विस्तार से चर्चा कीजिए। **20**

9. क्या 'पर्यावरण' और 'विकास' के बीच कोई अपरिहार्य विरोधाभास है? चर्चा कीजिए। **20**

10. गांधी के गैर-औद्योगिक विकास मॉडल की मुख्य विशेषता पर चर्चा कीजिए। **20**

एम.एच.आई.-09: भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.-09

सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.-09/ए.एस.टी./टी.एम.ए/2024-25
पूर्णांक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-क

1. भारतीय राष्ट्रवाद पर मार्क्सवादी और सबाल्टर्नवादी इतिहासकारों के विचारों की तुलना कीजिए। **20**

2. भारतीय विचारकों के विशेष संदर्भ में आर्थिक राष्ट्रवाद पर एक टिप्पणी लिखिए। **20**

3. 1920 और 1930 के दशकों के दौरान क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों की विचारधारा और गतिविधियों की चर्चा कीजिए। **20**

4. असहयोग आन्दोलन पर एक टिप्पणी लिखिए। **20**

5. निम्नलिखित में **किन्हीं दो** पर लगभग **250 शब्दों (प्रत्येक) में** संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए: **10+10**

   क) राष्ट्रवाद पर आधुनिकतावादी सिद्धांत

   ख) स्वदेशी आन्दोलन

   ग) महात्मा गांधी का राजनीतिक दर्शन

   घ) देशी रियासतों में राजनीतिक गोलबन्दी।

भाग-ख

6. 1945 और 1947 के बीच जन-आन्दोलनों के विभिन्न रूपों का वर्णन कीजिए। **20**

7. राष्ट्रवाद और किसान वर्ग के बीच के संबंध के बारे में विभिन्न इतिहासकारों के मतों की विवेचना कीजिए। **20**

8. राष्ट्रवादी आन्दोलन और दलित वर्ग के बीच के सम्बन्ध पर एक टिप्पणी लिखिए। **20**

9. भारत में औपनिवेशिक राज्यसत्ता के विरूद्ध संघर्ष में गांधीवादी रणनीति का विश्लेषण कीजिए। **20**

10. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर लगभग **250 शब्दों (प्रत्येक) में** संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए: **10+10**

    क) कांग्रेस द्वारा विभाजन की स्वीकृति के कारण

    ख) कांग्रेस के प्रति भारतीय पूंजीपतियों का रवैया

    ग) 1885 से 1914 तक कांग्रेस और मुसलमानों के बीच का सम्बन्ध

    घ) भारतीय संविधान की विशिष्टताएं।

एम.एच.आई.-10: भारत में नगरीकरण
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.-10

सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.-10/ए.एस.टी./टी.एम.ए./2024-25
पूर्णांक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखें। सत्रीय कार्य दो भागों में क एवं ख में विभाजित है। आपको प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-क

1. शहरी केन्द्रों के चिन्हक क्या हैं? नगरवाद के इतिहासलेखन के संदर्भ में परीक्षण कीजिए। **20**

2. मोहनजोदड़ो शहर की मुख्य विशेषताओं की चर्चा कीजिए। **20**

3. दक्कन में प्रांरभिक ऐतिहासिक शहरी केन्द्रों की विशेषताओं का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। **20**

4. क्या आप भारत में गुप्तोत्तर काल के दौरान 'विनगरीकरण के सिद्धांत' से सहमत हैं? चर्चा कीजिए। **20**

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर लगभग **250 शब्दों** (प्रत्येक) में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए: **10+10**

   क) शहर राज्य
   ख) मोहनजोदड़ो: सार्वजनिक स्थापत्य
   ग) मांडू
   घ) प्रारंभिक मध्ययुगीन भारत के दौरान सामाजिक परिवर्तन और शहरी विकास

भाग-ख

6. दिल्ली सल्तनत के शहर मुख्य रूप से छावनी वाले शहर थे। आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। **20**

7. विजयनगर के नगर योजना और दरबारी संस्कृति ने शाही नियंत्रण के प्रभुत्व को कैसे दर्शाया? **20**

8. सूरत के उत्थान और पतन की चर्चा कीजिए। **20**

9. औपनिवेशिक काल के दौरान शहरी नियोजन की अवधारणा कैसे बदल गई? **20**

10. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर लगभग **250 शब्दों** (प्रत्येक) में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए: **10+10**

    क) मुगल शहरों में उद्यान
    ख) भव्य प्रदर्शन स्थल के रूप में शहर
    ग) विभाजित शहर में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता
    घ) नए जोखिम और समकालीन शहरीकरण

पश्चिमी राजनीतिक चिंतन (प्लेटो से मार्क्स तक) (एमपीएसई-003)
अध्यापक जांच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.पी.एस.ई.-003
सत्रीय कार्य कोडः एएसएसटी/एमपीएसई–003/2024-2025
पूर्णांकः 100

इनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए, प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों का चयन आवश्यक है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 भाब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

भाग – 1

1. राजनीतिक चिंतन का राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक दर्शन से कैसे भेद किया जाता है? व्याख्या कीजिए।
2. चर्च और राज्य के मध्य संबंधों पर संत थॉमस ऐक्वीनास की समझ की चर्चा कीजिए।
3. जे. एस. मिल के निम्न कथन पर टिप्पणी करें : ''यह बेहतर है कि कोई असंतुष्ट सुकरात है बनिस्पत इसके कि वह संतुष्ट मूर्ख है''।
4. पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन में संत ऑगस्टीन का क्या प्रभाव रहा है? परीक्षण कीजिए।
5. मैक्यावली द्वारा सरकारों (शासनों) के वर्गीकरण का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

भाग – 2

निम्नलिखित पर लगभग 250 शब्दों में लघु टिप्पणी लिखिए।

6. क) संप्रभु के अधिकारों और दायित्वों पर थॉमस हॉब्स के विचार
   ख) बैंथम का राजनैतिक दर्शन

7. क) प्रतिनिधात्मक शासन पर जे. एस. मिल के विचार
   ख) धर्म और सहनशीलता पर एडमण्ड बर्क के विचार

8. क) मानव प्रकृति का इमैनुअल कॉंट का पराभौतिक–आदर्शवादी दृष्टिकोण
   ख) धर्म पर एलैक्स द तॉकवी के विचार

9. क) प्लैटो की क्रियाविधि
   ख) हेगेल का राज्य का सिद्धान्त

10. क) मार्क्स का ऐतिहासिक भौतिकवाद
    ख) नागरिक समाज और सामाजिक समझौते पर जॉन लॉक के विचार

आधुनिक भारत में सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन (एमपीएसई-004)
अध्यापक जांच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.पी.एस.ई.-004
सत्रीय कार्य कोडः एएसएसटी/एमपीएसई–004/2024-2025
पूर्णांकः 100

इनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए, प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों का चयन आवश्यक है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 भाब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

भाग – 1

1. पूर्व–आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में धर्म और राजनीति के अंतःसंबंधों की चर्चा कीजिए।
2. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में श्री अरोबिंदो की समालोचना का परीक्षण कीजिए।
3. 19वीं शताब्दी के आरंभ में भारत में राष्ट्रवाद के उदय की जांच कीजिए।
4. नकारात्मक और सकारात्मक हिंदुत्व पर एम.एस. गोलवालकर के विचारों का परीक्षण कीजिए।
5. जाति व्यवस्था और इसके विध्वंस पर डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के विचारों की चर्चा कीजिए।

भाग – 2

निम्नलिखित पर लगभग 250 शब्दों में लघु टिप्पणी लिखिए।

6. क) राष्ट्रवाद पर स्वामी विवेकानन्द के विचार
   ख) डॉ. राम मनोहर लोहिया के समाजवादी विचार

7. क) उपनिवेशिक काल में साम्राज्यवादी आंदोलनों में मुसलमानों की भूमिका
   ख) जवाहरलाल नेहरू की धर्मनिरपेक्षता की संकल्पना

8. क) हिंदु–मुस्लिम एकता पर सर सैयद अहमद खान
   ख) द्रविड़ लामबंदी पर ई. वी. रामास्वामी नायकर

9. क) गांधी के राजनैतिक परिप्रेक्ष्य के दार्शनिक आधार
   ख) जवाहरलाल नेहरू का वैज्ञानिक मानवतावाद

10. क) एम. एन. रॉय का परिवर्तनकारी मानवतावाद
    ख) रवींद्रनाथ टैगोर की राष्ट्रवाद की समालोचना